॥ शिवस्तवराज स्तोत्र ॥

Essence Of Astrology
- By Lokesh Agrawal
http://essenceofastro.blogspot.in/
https://www.facebook.com/essenceofastro

श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मखण्ड, अध्याय 19 में 'संसारपावन' नामक कवच का वर्णन करने के पश्चयात सौति कहते हैं - शौनक ! यह तो कवच कहा गया। अब स्तोत्र सुनिये। मन्त्रराज कल्पवृक्ष-स्वरूप है। इसे पूर्वकाल में वसिष्ठ जी ने दिया था।

ॐ नमः शिवाय

बाणासुर उवाच
वन्दे सुराणां सारं च सुरेशं नीललोहितम् ।
योगीश्वरं योगबीजं योगिनां च गुरोर्गुरुम् ।।

ज्ञानानन्दं ज्ञानरूपं ज्ञानबीजं सनातनम् ।
तपसां फलदातारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।।

तपोरूपं तपोबीजं तपोधनधनं वरम् ।

वरं वरेण्यं वरदमीड्यं सिद्धगणैर्वरैः।।

कारणं भुक्तिमुक्तीनां नरकार्णवतारणम् ।
आशुतोषं प्रसन्नास्यं करुणामयसागरम् ।।

हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसन्निभम्।
ब्रह्मज्योतिःस्वरूपं च भक्तानुग्रहविग्रहम् ।।

विषयाणां विभेदेन बिभ्रतं बहुरूपकम् ।
जलरूपमग्निरूपमाकाशरूपमीश्वरम् ।।

वायुरूपं चन्द्ररूपं सूर्य्यरूपं महत्प्रभुम् ।
आत्मनः स्वपदं दातुं समर्थमवलीलया ।।

भक्तजीवनमीशं च भक्तानुग्रहकातरम् ।
वेदा न शक्ता यं स्तोतुं किमहं स्तौमि तं प्रभुम् ।।

अपरिच्छिन्नमीशानमहो वाङ्मनसोः परम् ।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वृषभस्थं दिगम्बरम् ।
त्रिशूलपट्टिशधरं सस्मितं चन्द्रशेखरम् ।।

इत्युक्त्वा स्तवराजेन नित्यं बाणः सुसंयतः ।
प्राणमच्छङ्करं भक्त्या दुर्वासाश्च मुनीश्वरः ।।

सच्चिदानन्दस्वरूप शिव को नमस्कार है।

बाणासुर बोला– जो देवताओं के सार-तत्त्व स्वरूप और समस्त देव गणों के स्वामी हैं, जिनका वर्ण नील और लोहित है, जो योगियों के ईश्वर, योग के बीज तथा योगियों के गुरु के भी गुरु हैं, उन भगवान शिव की मैं वन्दना करता हूँ। जो ज्ञानानन्द स्वरूप, ज्ञानरूप, ज्ञानबीज, सनातन देवता, तपस्या के फलदाता तथा सम्पूर्ण सम्पदाओं को देने वाले हैं, उन भगवान शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ। जो तपःस्वरूप, तपस्या के बीज, तपोधनों के श्रेष्ठ, धन, वर, वरणीय, वरदायक तथा श्रेष्ठ सिद्धगणों के द्वारा स्तवन करने-योग्य हैं, उन भगवान शंकर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो भोग और मोक्ष के कारण, नरक समुद्र से पार उतारने वाले, शीघ्र प्रसन्न होने वाले, प्रसन्नमुख तथा करुणासागर हैं, उन भगवान शिव को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनकी अंगकान्ति हिम, चन्दन, कुन्द, चन्द्रमा, कुमुद तथा श्वेत कमल के सदृश उज्ज्वल है, जो ब्रह्मज्योतिःस्वरूप तथा भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये विभिन्न रूप धारण करने वाले हैं, उन भगवान शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ। जो विषयों के भेद से बहुतेरे रूप धारण करते हैं, जल, अग्नि, आकाश, वायु, चन्द्रमा और सूर्य जिनके स्वरूप हैं, जो ईश्वर एवं महात्माओं के प्रभु हैं और लीलापूर्वक अपना पद देने की शक्ति रखते हैं, जो भक्तों के जीवन हैं तथा भक्तों पर कृपा करने के लिये कातर हो उठते हैं, उन ईश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ। वेद भी जिनका स्तवन करने में

असमर्थ हैं, जो देश, काल और वस्तु से परिच्छिन्न नहीं हैं तथा मन और वाणी की पहुँच से परे हैं, उन परमेश्वर प्रभु की मैं क्या स्तुति करूँगा! जो बाघम्बरधारी अथवा दिगम्बर हैं, बैल पर सवार हो त्रिशूल और पट्टिश धारण करते हैं, उन मन्द मुस्कान की आभा से सुशोभित मुख वाले भगवान चन्द्रशेखर को मैं प्रणाम करता हूँ। यों कहकर बाणासुर प्रतिदिन संयमपूर्वक रहकर स्वतराज से भगवान की स्तुति करता था और भक्तिभाव से शंकर जी के चरणों में मस्तक झुकाता था। मुनीश्वर दुर्वासा भी ऐसा ही करते थे।

मुने! वसिष्ठ जी ने पूर्वकाल में त्रिशूलधारी शिव के इस परम महान अद्भुत स्तोत्र का गन्धर्व को उपदेश दिया था।

फलश्रुति

इदं स्तोत्रं महापुण्यं पठेद्भक्त्या च यो नरः ।
स्नानस्य सर्वतीर्थानां फलमाप्नोति निश्चितम् ।।
अपुत्रो लभते पुत्रं वर्षमेकं शृणोति यः ।
संयतश्च हविष्याशी प्रणम्य शङ्करं गुरुम् ।।

जो मनुष्य भक्तिभाव से इस परम पुण्यमय स्तोत्र का पाठ करता है, वह निश्चय ही सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान का फल पा लेता है। जो संयमपूर्वक हविष्य खाकर रहते हुए जगद्गुरु शंकर को प्रणाम करके एक वर्ष तक इस स्तोत्र को सुनता है, वह पुत्रहीन हो तो अवश्य ही पुत्र प्राप्त कर लेता है।

गलत्कुष्ठी महाशूली वर्षमेकं शृणोति यः ।
अवश्यं मुच्यते रोगाद्व्यासवाक्यमिति श्रुतम् ।।
कारागारेऽपि बद्धो यो नैव प्राप्नोति निर्वृतिम् ।
स्तोत्रं श्रुत्वा मासमेकं मुच्यते बन्धनाद् ध्रुवम् ।।

जिसको गलित कोढ़ का रोग हो या उदर में बड़ा भारी शूल उठता हो, वह यदि एक वर्ष तक इस स्तोत्र को सुने तो अवश्य ही उस रोग से मुक्त हो जाता है। यह बात मैंने व्यास जी के मुँह से सुनी है। जो कैद में पड़कर शान्ति न पाता हो, वह भी एक मास तक इस स्तोत्र को श्रवण करके अवश्य ही बन्धन से मुक्त हो जाता है।

भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भक्त्या मासं शृणोति यः ।
मासं श्रुत्वा संयतश्च लभेद्भ्रष्टधनो धनम् ।।
यक्ष्मग्रस्तो वर्षमेकमास्तिको यः शृणोति चेत् ।
निश्चितं मुच्यते रोगाच्छङ्करस्य प्रसादतः ।।

जिसका राज्य छिन गया हो, ऐसा पुरुष यदि भक्तिपूर्वक एक मास तक इस स्तोत्र का श्रवण करे तो अपना राज्य प्राप्त कर लेता है। एक मास तक संयमपूर्वक इसका श्रवण करके निर्धन मनुष्य धन पा लेता है। राजयक्ष्मा से ग्रस्त होने पर जो आस्तिक पुरुष एक वर्ष तक इसका श्रवण करता है, वह भगवान शंकर के प्रसाद से निश्चय ही रोगमुक्त हो जाता है।

यः शृणोति सदा भक्त्या स्तवराजमिमं द्विज ।
तस्यासाध्यं त्रिभुवने नास्ति किंचिच्च शौनक ।।
कदाचिद्बन्धुविच्छेदो न भवेत्तस्य भारते ।
अचलं परमैश्वर्य्यं लभते नात्र संशयः ।।

द्विज शौनक! जो सदा भक्ति भाव से इस स्तवराज को सुनता है उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता। भारतवर्ष में उसको कभी अपने बन्धुओं से वियोग का दुःख नहीं होता। वह अविचल एवं महान ऐश्वर्य का भागी होता है, इसमें संशय नहीं है।

सुसंयतोऽतिभक्त्या च मासमेकं शृणोति यः ।
अभार्य्यो लभते भार्य्यां सुविनीतां सतीवराम् ।।
महामूर्खश्च दुर्मेधा मासमेकं शृणोति यः ।
बुद्धिं विद्यां च लभते गुरूपदेशमात्रतः।।

जो पूर्ण संयम से रहकर अत्यन्त भक्तिभाव से एक मास तक इस स्तोत्र का श्रवण करता है, वह यदि भार्याहीन हो तो अति विनयशील सती-साध्वी सुन्दरी भार्या पाता है। जो महान मूर्ख और खोटी बुद्धि का है, ऐसा मनुष्य यदि इस स्तोत्र को एक मास तक सुनता है तो वह गुरु के उपदेश मात्र से बुद्धि और विद्या पाता है।

कर्मदुःखी दरिद्रश्च मासं भक्त्या शृणोति यः।
ध्रुवं वित्तं भवेत्तस्य शङ्करस्य प्रसादतः।।
इह लोके सुखं भुक्त्वा कृत्वा कीर्तिं सुदुर्लभाम् ।
नानाप्रकारधर्मं च यात्यन्ते शङ्करालयम् ।।
पार्षदप्रवरो भूत्वा सेवते तत्र शङ्करम् ।
यः शृणोति त्रिसन्ध्यं च नित्यं स्तोत्रमनुत्तमम् ।।

जो प्रारब्ध-कर्म से दुःखी और दरिद्र मनुष्य भक्तिभाव से इस स्तोत्र का श्रवण करता है, उसे निश्चय ही भगवान शंकर की कृपा से धन प्राप्त होता है। जो प्रतिदिन तीनों संध्याओं के समय इस उत्तम स्तोत्र को सुनता है, वह इस लोक में सुख भोगता, परम दुर्लभ कीर्ति प्राप्त करता और नाना प्रकार के धर्म का अनुष्ठान करके अन्त में भगवान शंकर के धाम को जाता है, वहाँ श्रेष्ठ पार्षद होकर भगवान शिव की सेवा करता है।

Essence Of Astrology द्वारा श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण से सङ्कलन